

अब नया भारत बन रहा है, हम उच्च विचार परिवार के लोग हैं : मुख्यमंत्री

अब देश में कोई भूखा नहीं मरता सभी गरीबों को मुफ्त राशन मिल रहा

अलीगढ़। अलीगढ़ में जनता को संबोधित करते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब देश में कोई भूखा नहीं मरता सभी गरीबों को मुफ्त राशन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि देश में बिना भेदभाव के विकास कार्य हो रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि अब नया भारत बन रहा है। देश के हर वर्ग के लोगों को योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

बोले- हम उच्च विचार परिवार के लोग हैं- इस दौरान सीएम योगी ने मंच से लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हम



उच्च विचार परिवार के लोग हैं। दीनदयाल ने कहा था कि विकास का पैमाना सबसे निचले व्यक्ति

के पायदान से होता है। सीएम योगी ने कहा कि केंद्र सरकार बहुत तेजी से काम कर रही है। यही वजह है कि पढ़ाई से लेकर कमाई तक में काम हुआ है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम हुआ है। अब जन धन खाते में लाभार्थी के बैंक अकाउंट में सीधे पैसे आते हैं। सीएम ने कहा कि बाबा साहब ने संविधान देकर भारत को एकता में जोड़ने का काम किया है। सीएम ने यह भी कहा कि तीन करोड़ परिवार के लोगों को मुफ्त बिजली दी गई।

मुख्यमंत्री योगी की फटकार के बाद राजस्व संबंधी मामलों के निपटारे में आयी तेजी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की फटकार के बाद राजस्व के पेंडिंग मामलों के निपटारे में तेजी दर्ज की गयी है। वर्तमान में राजस्व वाद के पेंडिंग मामलों के निस्तारण का रेश्यो शत-प्रतिशत दर्ज किया गया है जबकि राजस्व के मामलों के निस्तारण का रेश्यो 90 प्रतिशत पार कर गया है। यह जानकारी 16 अक्टूबर को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को राजस्व विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान अपर मुख्य सचिव राजस्व ने दी। मालूम हो कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 16 सितंबर को एनेक्सी में सीएम कमांड सेंटर की रिपोर्ट की समीक्षा की थी, जिसमें उन्होंने राजस्व के मामलों को समयबद्ध तरीके से निपटारे में होलाहवाली पर कड़ी फटकार लगाई थी। उन्होंने अधिकारियों को इसमें सुधार लाने की सख्त हिदायत देते हुए एक माह का वक्त दिया था। उसी का असर है कि एक माह में करीब-करीब पांच लाख राजस्व वादों का निपटारा किया गया है जबकि एक वर्ष से पांच वर्ष के विचाराधीन 2.6 लाख वादों का निपटारा किया गया। अपर मुख्य सचिव राजस्व सुधीर गंग ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 16 अक्टूबर को राजस्व की समीक्षा बैठक में राजस्व के पेंडिंग मामलों के निस्तारण के शत-प्रतिशत रेश्यो पर खुशी जाहिर की जबकि राजस्व के अन्य मामलों के निपटारे का रेश्यो 95 प्रतिशत करने के निर्देश दिये। सर्वाधिक राजस्व वादों का निस्तारण लखनऊ (1,00,307 वाद), बलिया (70,761 वाद), प्रयागराज (65,771 वाद), गोरखपुर (62,906 वाद), गोंडा (58,264 वाद) द्वारा किया गया है। इसी तरह पैमाइश के मामलों के निपटारे में टॉप पांच जिलों में बलिया, आजमगढ़, एटा, गाजीपुर और लखनऊ शामिल हैं। कुल 5,33,089 मामले रजिस्टर्ड हुए, जिनमें से 4,36,921 मामले निस्तारित किए जा चुके हैं।

'जबतक जिंदा हूँ तबतक...', राष्ट्रपति के सामने छलका नीतीश कुमार का भाजपा प्रेम, तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा हॉल

मोतिहारी। बिहार में राहें जुद्ध करने के करीब दो साल बाद गुरुवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का भाजपा प्रेम छलक पड़ा। उन्होंने किसी का नाम लिए बिना इशारों-इशारों में इसे जाहिर किया। दरअसल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार को महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह के मंच से संबोधित कर रहे थे। इसके स्थापना का इतिहास दोहराते हुए सीएम नीतीश कुमार ने एक बड़ा राजनीतिक बयान दे दिया। उन्होंने कहा कि जब तक हम जीवित रहेंगे, हमारा आपका संबंध रहेगा। हालांकि, उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन महात्मा गांधी प्रेक्षागृह में उपस्थित लोगों के बीच विभिन्न दलों के नेताओं को मौजूदगी में उन्होंने सामने बेटे नेताओं की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि 2007 में केंद्र सरकार देश के विभिन्न राज्यों में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना



की शुरुआत की। हमने तभी कहा था कि इसकी स्थापना बापू के चंपारण सत्याग्रह की भूमि पर होगी। 2009 में अधिनियम बना और तब से मैं लगा रहा, तब कांग्रेस की सरकार थी। मैं तबके मंत्री के यहां भी गया। भेंट भी की और आवास पर भोजन किया। उन्होंने कहा कि गया में खोलेंगे, लेकिन हमने चंपारण के लिए कहा। फिर यह तय हुआ दोनों स्थानों पर केंद्रीय विश्वविद्यालय खुलेगा। इसके बाद 2014 में केंद्र की सरकार ने मोतिहारी में केंद्रीय

गाजा युद्ध पर मायावती का बयान: बोलों- विनाशकारी साबित होगा नया युद्ध, पीएम मोदी के बयान का किया जिक्र

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा कि गाजा युद्ध में भी भारत को अपने पुराने स्टैंड पर कायम रहना चाहिए। भारत अपनी आजादी के बाद से ही विश्व में शान्ति, सौहार्द, स्वतंत्रता के लिए और नस्लभेद आदि के विरुद्ध अति गंभीर व सक्रिय रहा है। उन्होंने कहा कि रूस यूक्रेन युद्ध के साथ ही कोई नया युद्ध मानवता के लिए विनाशकारी साबित होगा। उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स पर कहा कि यूक्रेन युद्ध को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी ने जब यह कहा कि 'दिस इज नॉट एन इरा ऑफ वार' अर्थात् आज का युग युद्ध का नहीं है तो इसकी प्रशंसा पश्चिमी नेताओं ने खूब की। अब गाजा युद्ध को लेकर भी भारत व सक्रिय रहा है जिसकी प्रेरणा और शक्ति उसे उसके समतामूलक एवं मानवतावादी संविधान से मिली है। दुनिया में कहीं भी हो आज के लोबल वर्ल्ड में अधिकतर देशों



की अर्थव्यवस्था एक-दूसरे पर काफी हद तक जुड़ी है और निर्भर है। यूक्रेन युद्ध लगातार जारी है और दुनिया इससे प्रभावित है इसलिए विश्व में कहीं भी नया युद्ध मानवता के लिए कितना विनाशकारी होगा इसका अन्दाजा

हनुमानगढ़ी में साधु की चाकू से गोदकर हत्या, एक महीने में दूसरी वारदात से सनसनी, बंद मिला सीसीटीवी

अयोध्या। अयोध्या जिले के शाना रामजन्मभूमि अंतर्गत सिद्ध पीठ हनुमानगढ़ी मंदिर परिसर में स्थित एक आश्रम में एक नागा साधु की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। उसके गले, सीने व पीठ पर धारदार हथियार के गहरे निशान हैं। आशंका जताई जा रही है कि पहले किसी पतले तार से उसका गला घोंटा गया फिर चाकू से वार किया गया। बृहस्पतिवार सुबह में इसकी जानकारी होने पर सूचना पुलिस को दी गई। सूचना पर एएसपी राजकरण नायर, एएसपी सिटी मधुबन सिंह, सीओ बीकापुर डॉ राजेश तिवारी समेत फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची व घटनास्थल की जांच की। मृतक साधु की पहचान राम सहारे दास शिष्य दुर्बल दास (44) के रूप में हुई। वह बसंतिया पट्टी से जुड़ा हुआ था। बताया जा रहा है कि मृतक साधु आश्रम के सबसे अंदरूनी हिस्से के तीसरे कमरे में रहता था। उसके साथ दो शिष्य भी रहते थे। घटना



के बाद से ऋषभ शुक्ला नामक शिष्य मौके से फरार मिला जबकि दूसरे शिष्य गोविंद दास को पुलिस ने हिरासत में लिया है। जानकारी के अनुसार, फरार ऋषभ शुक्ला को मृतक साधु ने 15 दिन पहले ही अपने साथ रखा था, वह खाना बनाता था। घटना के पीछे लूट का भी अंदेश जताया जा रहा है। मंदिर व अंगल-बगल रहने वाले नागा साधुओं का कहना है कि मृतक रामसहारे दास हनुमान जी का श्रृंगार आदि करता था। वहीं, उक्त आश्रम में सभी कमरों में सीसीटीवी लगा हुआ था लेकिन उसे किसी ने बंद कर दिया था। पुलिस को कुछ

एक परिवार के पांच लोगों को जहर देकर मार डाला, दो आरोपी महिलाएं गिरफ्तार

मुंबई। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली में एक ही परिवार के पांच सदस्यों को जहर देकर मार दिया गया है। पुलिस ने इस मामले में दो आरोपी महिलाओं को गिरफ्तार किया है। आरोपी महिलाओं की पहचान संघमित्रा कुम्भारे और रोजा रामटेके के रूप में हुई है। पुलिस का कहना है कि पीड़ित परिवार के पांच सदस्यों की एक महीने में सशिथ परिस्थितियों में मौत हो गई थी। पुलिस ने बताया कि पैतृक संपत्ति के विवाद और अन्य विवाद में परिवार के सदस्यों को जहर दिया गया। गढ़चिरोली के एस्परी नीलोत्पल ने बताया कि घटना गढ़चिरोली जिले की अहेरी तहसील के गांव महागाओ की है। यहां बीते कुछ दिनों में शंकर पिर कुम्भारे और उनके परिवार के चार सदस्य अचानक बीमार हुए और 20 दिनों के भीतर पांचों लोगों की मौत हो गई। पहले 20 सितंबर 2023 को शंकर कुम्भारे और उनकी पत्नी विजया कुम्भारे बीमार हुए और उन्हें अहेरी के अस्पताल

में भर्ती कराया गया। इसके बाद बेहतर इलाज के लिए उन्हें नागपुर भेजा गया। जहां 26 सितंबर को शंकर कुम्भारे और अमले दिन यानी 27 सितंबर को विजया कुम्भारे की मौत हो गई। इसके बाद शंकर की बेटी कोमल दाहागांवकर और शंकर का बेटा रोशन कुम्भारे और रोशन की बेटी आनंदा भी बीमार होकर अस्पताल में भर्ती हो गए। अस्पताल में भी उनकी हालत बिगड़ती गई और 8 अक्टूबर को कोमल, 14 अक्टूबर को आनंदा और 15 अक्टूबर को रोशन कुम्भारे की भी मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि आरोपी महिलाओं ने इन पांच सदस्यों के अलावा दो अन्य लोगों को भी जहर दिया था लेकिन फिलहाल उनकी हालत स्थिर है। पुलिस ने बताया कि अचानक से परिवार के पांच लोगों की मौत होने पर उन्होंने मामले की जांच गंभीरता से की तो शंकर कुम्भारे की बहू संघमित्रा कुम्भारे और शंकर के साले की पत्नी रोजा रामटेके की सलिपता नजर आई।

सीएम फेस को लेकर गहलोत बोले- मैं सीएम पद छोड़ना चाहता हूँ पर ये पद मुझे नहीं छोड़ेगा

जयपुर। विधानसभा चुनावों को लेकर राजस्थान के टिकटों की सूची फाइनल करवाने के लिए दिल्ली बैठे सीएम अशोक गहलोत ने गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सिपासी हलकों में चल रहे तमाम सवालों के जवाब दिए। प्रदेश में चौथी बार सीएम बनने के सवाल पर गहलोत ने कहा कि मैं सीएम पद छोड़ना चाहता हूँ, लेकिन यह पद मुझे नहीं छोड़ रहा है और शायद छोड़ेगा भी नहीं। उन्होंने कहा कि कुछ तो कारण होंगे कि सीएम योगी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी मुझे बार-बार सीएम बना रहे हैं। राजस्थान में उनकी सरकार से बगवत करने वाले सचिन पावलट और उनके विधायकों को टिकट दिए जाने के सवाल पर बोले-अभी सिर्फ जीत फ्राइटेरिया है बाकी सब हम भूल चुके हैं। उनके साथ जो गए थे उनके टिकट सब क्लियर हो रहे हैं। एक टिकट पर भी मैंने ऑब्जेक्शन नहीं किया। प्रदेश में एंटीइन्डमबेंसी के चलते टिकट काटे जाने के सवाल पर गहलोत ने कहा सीएम के खिलाफ कोई आरोप नहीं है। विधायकों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप और एंटीइन्डमबेंसी भी है, लेकिन टिकट तब कटते हैं, जब वहां विकल्प हों। मैंने एक बात कही कि सरकारें बदलने का



भाजपा ने नया मॉडल अपनाया है यह बहुत खतरनाक है। अरुणाचल प्रदेश के सीएम को तो इसके चलते आत्महत्या तक करनी पड़ी। प्रदेश में आचार संहिता लागू होने के बाद इंडी की कार्रवाई को लेकर भी सीएम अशोक गहलोत ने अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री गजेंद्र शेखावत संजीवनी घोटाले के आरोपी उनकी जांच क्यों नहीं की जा रही। गहलोत बोले, यहां के सांसद इंडी के ऑफिस में भ्रष्टाचार के आरोप और एंटीइन्डमबेंसी भी है, लेकिन टिकट तब कटते हैं, जब वहां विकल्प हों। मैंने एक बात कही कि सरकारें बदलने का

करोड़ रुपये पड़े हैं, इंडी वहां पहुंच गई। गहलोत ने पीएम नरेंद्र मोदी पर भी निशाना साधा। बोले, मोदी कहते हैं कि मैं गहलोत से बड़ा ईमानदार हूँ तो मैं उनको कहरना चाहता हूँ कि मैं मोदी से बड़ा फकीर हूँ। जिंदकी में एक ईंच जमीन नहीं खरीदी, सोना नहीं खरीदा, इसलिए मोदी को बड़ा दावा नहीं करना चाहिए। सचिन पावलट से विवादों के सवाल पर गहलोत ने गुगली फेंकी। उन्होंने कहा कि विपक्ष को तकलीफ ही यही हो रही है कि इनके बीच झगड़े क्यों नहीं हो रहे हैं। गहलोत बोले कि मैं उनके फेसलॉ में भागीदार बन रहा हूँ। उन्होंने कहा कि अभी सिर्फ जीत फ्राइटेरिया है बाकी सब हम भूल चुके हैं। उनके साथ जो गए थे उनके टिकट सब क्लियर हो रहे हैं। एक टिकट पर भी मैंने ऑब्जेक्शन नहीं किया। वसुंधरा राजे पर बोले हुए उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी का अंदरूनी मामला है लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि मेरे कारण उनको सजा नहीं मिलनी चाहिए। मेरी सरकार गिर रही थी तो उनके नेता कैलाश मेघवाल ने एक क्रिसा बताया था। वह मैंने किसी सभा में कह दिया। उसे लेकर राजे को निशाना बनाया गया।

सिर्फ छह सेकंड में फुटपाथ पर चल रहे पांच लोगों को कार ने उड़ाया, एक की मौत, कैमरे में कैद हुई घटना

मंगलुरु। कर्नाटक के मंगलुरु में हिट एंड रन का मामला सामने आया है। यहां एक फुटपाथ पर पैदल जा रहे पांच लोगों को कल शाम करीब चार बजे एक तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी। दुर्घटना में एक महिला की मौत हो गई, जबकि चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सीसीटीवी फुटज में मंगलुरु में मन्नागुड्डा जंक्शन के पास लोगों को कम भीड़ वाले फुटपाथ पर चलते हुए देखा जा सकता है। तभी एक कार अचानक से आती है और और फुटपाथ पर पांच लोगों (दो महिलाओं और तीन लड़कियों) को टक्कर मार देती है। पुलिस ने बताया कि हुंडई ईऑन कार कमलेश बलदेव द्वारा चलाई जा रही थी। वीडियो में दिख रहा है कि पीछे से आ रही कार ने पहले चार लोगों को टक्कर मारी। एक महिला को कुचलने के बाद एक अन्य महिला को टक्कर मार दी, जिसने कार को पास आते देख भागने की कोशिश भी की। इतना ही नहीं, फुटपाथ पर लगे एक पोल से कार जाकर टक्कर जाती है। बाद

में डिवाइडर से टकराने से पहले कार चालक महिला को कुछ मीटर तक धसीटता हुआ ले जाता है। घटना मात्र छह सेकंड में हुई। आसपास मौजूद लोग जबतक समझ पाते तबकर आरोपी ने कार से पांच लोगों को टक्कर मार दी थी, जिसमें एक महिला की मौत हो गई और तीन लड़कियों सहित चार घायल हो गए। आरोपी को बाद में फरार हो गया। आरोपी ने कार को एक शोरूम के सामने खड़ा किया और अपने घर चला गया। पुलिस ने बताया कि आरोपी अपने पिता के साथ पुलिस थाने आया। वहीं, घटनास्थल पर अफरा तफरी मच गयी। वाहन रुक गए और लोग घायलों की मदद के लिए दौड़ पड़े। एक महिला उठने में कामयाब रही, लेकिन लंगड़ा रही थी। वहीं, गंभीर रूप से घायल दो लोगों को ऑटो में अस्पताल ले जाया गया। हादसे में 23 साल की रूपश्री की मौत हो गई। पुलिस ने लापरवाही से मौत का मामला सहित भारतीय दंड संहिता की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है।

संपादकीय

इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध में आम लोगों की मौत पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय

इजराइल पर हमास के हमले के बाद युद्ध की जटिल होती तस्वीर में अब गाजा पट्टी में जैसे हालात पैदा हो गए हैं, वह समूची दुनिया के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। विडंबना यह है कि युद्ध में शामिल सभी पक्ष बड़-चढ़ कर दावा यही करते हैं कि वे ईसानियत को बचाने के लिए दुश्मन से लड़ाई लड़ रहे हैं, लेकिन सच यह है कि किसी भी पक्ष के हमले में आम लोग मरते हैं और सबसे ज्यादा नुकसान मानवता को ही पहुंचता है। मंगलवार को गाजा पट्टी के एक अस्पताल पर जैसा हमला हुआ, उसकी आशंका किसी को नहीं थी, क्योंकि अस्पतालों को युद्ध के सबसे विकट समय में भी एक सुरक्षित पनाहगह माना जाता है। गौरतलब है कि गाजा सिटी के अल-अहली अरब बैटिस्ट अस्पताल पर राकेट से हुए हमले में कम से कम पांच सौ लोगों के मारे जाने की खबर आई। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह हमला किसने किया, लेकिन जब इस मामले ने तूल पकड़ लिया, तब इजराइल ने इसमें अपना हाथ होने से इनकार किया और इसके लिए गाजा पट्टी में छिप कर वार कर रहे हमास को जिम्मेवार ठहराया। इससे पहले हमास और फिलिस्तीनी प्रशासन ने इस हमले का सीधा आरोप इजराइल पर लगाया था। सवाल है कि गाजा पट्टी में अस्पताल पर हुए हमले में पांच सौ से ज्यादा लोगों को क्यों मार डाला गया? उनका क्या दोष था? यह सवाल किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को परेशान करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी मारे गए लोगों के प्रति संवेदना जताते हुए कहा कि इस हमले में शामिल लोगों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। ज़ासदी यह है कि इजराइल और हमास के बीच शुरू हुए ताजा टकराव के बाद दोनों पक्षों के हमले में आमतौर पर निर्दोष नागरिक ही मारे जा रहे हैं, लेकिन इसकी जिम्मेदारी लेने के लिए कोई तैयार नहीं है। अब तक इस जंग में लगभग पांच हजार लोगों की जान जा चुकी है, लेकिन गाजा सिटी में अस्पताल पर हुए हमले ने सबको यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर युद्ध में शामिल सभी पक्षों का मकसद क्या होता है! इस हमले के बाद ये सवाल भी उठने लगे हैं कि क्या इसे युद्ध अपराधों की श्रेणी में रखा जाएगा? दरअसल, युद्ध अपराध एक संगीन आरोप माना जाता है और ऐसे मामलों में अंतरराष्ट्रीय कानून काम करता है। हालांकि इसकी जांच करना और वास्तविक अपराधियों को सजा दिलाना एक जटिल काम रहा है, फिर भी गाजा पट्टी में अस्पताल पर हमले के लिए जिम्मेदार माना जाएगा, उस पर अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत युद्ध अपराध का आरोप लग सकता है। इजराइल पर हमास के हमले के बाद जारी युद्ध में दोनों पक्षों पर अंतरराष्ट्रीय कानूनों को ताक पर रखने के आरोप लगे हैं और संयुक्त राष्ट्र का कडना है कि वह इसकी जांच कर रहा है। छोटे विवाद से लेकर बड़े स्तर पर जंग की स्थिति में जेनेवा सम्मेलन के तहत न केवल अपने पक्ष के, बल्कि विरोधी सेनाओं के बीमारों, घायलों और कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार और उनके इलाज का नियम बनाया गया है। मगर इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध में आम लोगों पर हमले से लेकर गाजा पट्टी में एक बड़ा इलाका खाली कराने, जीवन से संबंधित जरूरी चीजों को बाधित करने जैसी घटनाएं सामने आई हैं, वे यही बताती हैं कि सभ्य होने का दावा करती दुनिया में भी युद्ध के दौरान नियम-कायदों का ध्यान रखना शायद किसी के लिए प्राथमिक दायित्व नहीं होता। इसकी कीमत उन लोगों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है, जो पूरी तरह निर्दोष होते हैं।

चल रही तलाश!



बनें नए समीकरण ।
चल रही तलाश ॥
लाना अलग चेहरे ।
जगी ऐसी प्यास ॥
करना सब नवीन है ।
आए नई बहार ॥
चाह रहे हम करने को ।
जनता पर उपकार ॥
किए यदि सुधार ।
तय मिलना है फल ॥
कार्यकताओं को ।
मिल जाए कुछ बल ॥
रणनीति ही ऐसी ।
है हमने बनाई ॥
उब गए हैं हम ।
हुई जो जगहसाई ॥

—कृष्णोन्द्र राय

यूपी में सपा और कांग्रेस की लड़ाई इंडिया गठबंधन की असलियत को उजागर कर रही है

अजय कुमार

हिंदी शासित राज्यों- मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में होने वाले विधानसभा चुनाव में सीटों के बंटवारे को लेकर सपा-कांग्रेस के बीच रार उनके नेताओं में दूरियां भी बढ़ा रही हैं। जिसके चलते विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए में दरा बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के विवादित बयान इस मनुमुटाव में आम में घी डालने का काम कर रहे हैं। वह लगातार अखिलेश यादव को नसीहत दे रहे हैं, जो सपा नेताओं को राज नहीं आ रहा है। इसी क्रम में अब उन्होंने मध्य प्रदेश में सीटों के बंटवारे पर सपा नेताओं का फिर बड़ा दिल दिखाने का सुझाव दिया है।

अजय राय का कहना है कि उत्तर प्रदेश से बाहर सपा को मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों में अपना आधार भी देना चाहिए। मध्य प्रदेश में पिछले विधानसभा चुनाव में सपा को केवल एक सीट मिली थी। इससे पार्टी को अपनी जमीनी स्थिति को भी समझना चाहिए। अजय राय ने कहा कि उत्तराखंड की बागेश्वर सीट पर हुए विधानसभा के उपचुनाव में भी सपा ने अपना प्रत्याशी उतारा था, जिसका नुकसान कांग्रेस प्रत्याशी को उठाना पड़ा था। इसके बाद भी कांग्रेस ने बड़ा दिल दिखाया था। प्रदेश में घोसी सीट पर विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने बढ़कर सपा प्रत्याशी को समर्थन दिया था और कांग्रेस नेताओं ने घोसी जाकर प्रचार किया था। पांच राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में सपा



को सभी जगह पहले अपना आधार देना चाहिए। हालांकि आने वाले लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में सीटों के बंटवारे पर राय ने प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन हकीकत यह भी है कि उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव में सपा व कांग्रेस के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर भी खींचतान के संकेत मिलते रहे हैं। कांग्रेस नेता सभी 80 सीटों पर चुनाव लड़ने का दावा करते आए हैं। वहीं सपा कांग्रेस के पाले में 15 से 20

सीट ही जाने देना चाहती है। दोनों ही दलों के नेता सीटों के बंटवारे को लेकर एक-दूसरे पर दबाव भी बनाते नजर आए हैं। इसी कड़ी में संसद में भाजपा सांसद द्वारा बसपा सांसद दानिश अली पर की गई गंभीर टिप्पणी के बाद पहले राहुल गांधी और फिर अजय राय ने दिल्ली में दानिश अली से मुलाकात की थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सक्रिय मुस्लिम नेता व पूर्व विधायक इमरान मसूद को भी कांग्रेस ने घर

वापसी कराई। इसके बाद राष्ट्रीय लोक दल (रालोद) के कद्दावर नेता रहे नवाब कोकब हमीद के बेटे नवाब अहमद हमीद और सपा नेता व पूर्व मंत्री ओमवीर तोमर भी कांग्रेस में शामिल हुए। कांग्रेस मुस्लिम नेताओं में अपनी पैठ बढ़ाकर सपा पर दबाव बनाती दिख रही है। ऐसे में उत्तर प्रदेश में आने वाले दिनों में दोनों दलों के नेताओं के बीच खींचतान बढ़ने की संभावनाएं भी तेज होती जा रही हैं। उत्तर

प्रदेश में इंडिया गठबंधन कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की जित के कारण 'खतरे का निशान' पार करता दिख रहा है। जो पार्टी जहां मजबूत है वह वहां दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करेगा। मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस गठबंधन सहयोगी समाजवादी पार्टी को भाव नहीं दे रही है तो उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी अपने नेतृत्व में चुनाव लड़े जाने की बात कर रही है। दोनों के बीच सीटों के बंटवारे पर बार-बार मनुमुटाव उजागर हो रहा है। यूपी में कांग्रेस करीब दो दर्जन सीटों पर अपनी दावेदारी ठोक रही है तो वहीं समाजवादी पार्टी का कहना है कि वह दावेदारी ना ठोके यह बताए कि कितने सीटों पर चुनाव जीत सकते हैं। पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव में जिस तरह की खटास सपा और कांग्रेस के बीच देखी जा रही है उसका असर अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव में भी पड़ना तय नजर आ रहा है क्योंकि यूपी में समाजवादी पार्टी अपने को 'अपर हंड' मानती है और कांग्रेस को चार-पांच सीटों से ज्यादा देने को तैयार नहीं है। यह बात कांग्रेस को काफी खल रही है, जिस तरह से उत्तर प्रदेश कांग्रेस का नेतृत्व समाजवादी पार्टी के खिलाफ बयान बाजी कर रहा है उससे भी दोनों दलों के बीच की दूरियां बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों पर इंडिया गठबंधन का खेल खराब हो सकता है जिसका पूरा फायदा भारतीय जनता पार्टी उठाने की कोशिश करेगी।

निठारी कांड के दोषियों का बरी होना सरकार और जांच एजेंसियों के कामकाज पर बड़ा सवाल

स्वदेश कुमार

उत्तर प्रदेश के दिल्ली से सटे नोयडा के निठारी गांव में आज से 17 वर्ष पूर्व दिल दहला देने वाले उस मंजर को कौन भूल सकता है, जब 29 दिसंबर 2006 को नोयडा, सेक्टर 31 के निठारी गांव स्थित डी-5 कोठी के आसपास और कोठी के पीछे बहते नाले तक में एक के बाद एक नर कंकाल मिलने से लोगों की रूढ़ कांप उठी थी। यह सभी कंकाल छोटी उम्र के बच्चे-बच्चियों के थे। उस समय प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार थी और मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे। इस हादसे ने सीएम की कुर्सी को हिला कर रख दिया था। जनता आगबबूला थी तो विपक्ष ने भी इस पर खूब सियासत की थी, क्योंकि तीन-चार महीने बाद यूपी विधान सभा चुनाव होने थे। निठारी कांड से हिली मुलायम सरकार की छवि को इस कांड से काफी बड़ा दाग लगा था। तब मुलायम सरकार में शामिल शिवपाल यादव से जब पत्रकारों ने निठारी कांड के बारे में पूछा तो उन्होंने बड़ी हठधर्मी से कह दिया था कि इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं, इसके बाद पुलिस ने भी जांच में हिलाई बरतना शुरू कर दी। इस मामले में तत्कालीन पुलिस

अधिकारी और उनके अधीनस्थों पर भी लापरवाही के आरोप लगे हैं। यह आरोप वू ही नहीं लगे थे, इसके पीछे सच्चाई भी थी। सूत्र बताते हैं कि 2005 से 2006 के बीच जब बच्चे गायब हो रहे थे, तब कुछ पुलिसकर्मी घटना के पदाफांश के करीब पहुंच गए थे, लेकिन तत्कालीन सरकार के दबाव में अधिकारियों ने मामला पदाफांश नहीं होने दिया था। सरकार के करीब रहे एक स्थानीय नेता ने भी जांच को भटकाने में खास भूमिका निभाई थी।

सूत्र बताते हैं कि उस समय जिले में तैनात अधिकारी इस मामले को लेकर दो फाड़ हो गए थे। बच्चों के प्रति संवेदना रखने वाले पुलिसकर्मियों का एक गुट मामले का पदाफांश चाहता था, जबकि दूसरा गुट सरकार की छवि धूमिल न हो, इसके लिए प्रकरण को दबाए रहा। बच्चे गरीबों के थे। उनके पास किसी की सिफारिश नहीं थी। यही कारण है कि मानवीय संवेदनाएं इस हद तक तार-तार हो गई थी कि एक के बाद एक 19 बच्चे लापता होते रहे। जांच के लिए पुलिस की कई टीमें लगाई गईं। एसओजी और तकनीकी रूप से मजबूत पुलिस टीम को बच्चों के गायब होने की

सच्चाई सामने लाने की जिम्मेदारी सौंपी गई, उन्होंने मुलायम सरकार के दबाव में साक्ष्यों को कमजोर कर दिया, लेकिन जनता ने समाजवादी पार्टी के साथ पूरा इंसाफ किया और अप्रैल 2007 के विधान सभा चुनाव में सपा को बुरी तरह से हार का सामना करना पड़ा एवं बसपा की सरकार बनी। उधर, निठारी कांड पर जांच जारी रही, जिसमें तमाम चौकाने वाले खुलासे हुए। लापता 18 बच्चों और एक कॉल गलती की हत्या की बात सामने आई। कुछ समय बाद ही मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच का जिम्मा सीबीआई को सौंप दिया गया, जिस कोठी के अंदर से नर कंकाल मिले थे उसके मालिक मोनिरुद्दिन सिंह पंडेर और नौकर सुरेंद्र कोली आरोपी बने। उन्होंने पुलिस के समक्ष अपना जुर्म भी कबूल कर लिया था, पुलिस का कहना था कि जांच के दौरान कोली ने नरभक्षण और नेक्रोफिलिया (शवों के साथ संबंध बनाने) की बात कबूल की थी। बाद में उन्होंने अदालत में अपना कबूलनामा ये कहते हुए वापस ले लिया कि उनसे जबरन ये बयान दिलवाया गया था। सीबीआई ने सुरेंद्र कोली और पंडेर के खिलाफ 19 मामले दर्ज किए थे। जहां कोली पर हत्या, अपहरण,

बलात्कार, सबूतों को मिटाने जैसे आरोप थे तो वहीं पंडेर पर अनैतिक तस्करी का आरोप था। कुल मिलाकर दोनों के खिलाफ अलग-अलग धाराओं में 19 मामलों में ट्रायल शुरू हुआ और 2017 में सीबीआई कोर्ट द्वारा दोनों को फांसी की सजा सुनाई गई, लेकिन करीब 17 साल बाद 16 अक्टूबर 2023 का इलाहाबाद हाई कोर्ट ने चौकाने वाला फैसला देते हुए पंडेर और कोली दोनों को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया और सीबीआई को पर्याप्त सबूत नहीं जुटाने के लिये फटकार भी लगाई।

इलाहाबाद हाईकोर्ट से इस फैसले के बाद पीड़ित परिवार हो चुकी उस कोठी के पास पहुंचे जहां उनके बच्चों के साथ हैवानियत की गई थी तो उनका दम टूट चुका पड़ा। वहां पहुंचे उन लोगों के चेहरे बुझे हुए थे तो कानून के प्रति नाराजगी भी थी। अपनों को खोने वालों ने कहा कि 17 साल के लम्बे इंतजार के बाद भी हम लोगों को न्याय नहीं मिला। हम लोग आज भी वहीं खड़े हैं, जहां घटना वाले दिन खड़े थे। निठारी कांड में अपने बच्चों को खोने वाले परिवार वालों का लगभग एक ही सवाल है कि अगर पंडेर

और कोली निर्दोष हैं तो उनके बच्चों को किसने मारा है। इसका जवाब कौन देगा? हो सकता है कि अदालत के सामने मजबूत साक्ष्य पेश करने में सीबीआई सफल नहीं रही हो, लेकिन इससे पीड़ित परिवार वालों का कोई लेना-देना नहीं है। सवाल यह भी उठ रहा है जिस आधार पर नीचे की दो अदालतों ने आरोपियों को फांसी की सजा सुनाई थी, वह आधार हाईकोर्ट में टिक क्यों नहीं पाए और दोनों आरोपी बरी हो गये, जबकि इस कांड को रेवेरेस्ट ऑफ द रेयर कांड माना गया था। गौरतलब है कि हत्या मामले में किसी मुजरिम को तभी फांसी की सजा सुनाई जाती है जब मामला रेवेरेस्ट ऑफ रेयर का हो। इस कारण सजा पर बहस के दौरान एक तरफ जहां सरकारी पक्ष मामले को रेवेरेस्ट ऑफ रेयर की श्रेणी में लाने की कोशिश करता है वहीं बचाव पक्ष की वह कोशिश होती है कि वह मामले को रेवेरेस्ट ऑफ रेयर की श्रेणी में नहीं आने दे। इस बात की अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि निठारी कांड के समय जांच में सामने आए तथ्य इतने भयावह थे कि ऐसी हैवानियत इंसान करेगा, ये कल्पना ही कोई नहीं कर पा रहा था। इसके बाद नर पिशाच शब्द

लोगों की जुबां से यहां अपराध करने वालों के लिए निकला। निठारी में उस समय कई बच्चे लापता हुए थे, जिनके साथ हैवानियत किये जाने की बात इस कांड में सामने आ रही थी। गांव निठारी निवासी राजवती कहती हैं कि पिछले 17 वर्षों में काफी कुछ बदल गया है, लेकिन उस नरसंहार कांड की यादें आज भी लोगों के दिलों दिगम में ताजा हैं। राजवती जोकि अब जूता-चप्पल की दुकान चला रही हैं उन्होंने अपना 5 साल का बच्चा निठारी कांड में खोया था, उन्होंने बताया कि शादी के 8 साल बाद उनको बच्चा हुआ था। 27 अप्रैल 2006 को वह घर के बाहर खेलने के लिए गया था लेकिन वापस नहीं लौटा। फिर जानकारी मिली कि उसका कंकाल डी-5 बंगले के सामने बहने वाले नाले में मिला था। राजवती जोते देकर कहती हैं कि अगर कोर्ट ने कह दिया है कि वो दोनों दोषी नहीं हैं तो किसने मेरे बच्चे को मारा है। इसी तरह से निठारी कांड की पीड़ित और लापता हुई 10 वर्षीय बच्ची की मां हाईकोर्ट के फैसले के बाद फफक पड़ी और बोलीं वक्त बीत गया लेकिन आसू नहीं सूखे और बेटी की यादें धुंधली नहीं हुईं।

यूरोप में इस्लामिक आतंकवाद तेजी से बढ़ रहा है और इससे सभी देशों को खतरा

नीरज कुमार दुबे

इजराइल में हमास आतंकवादियों की ओर से किये गये निर्मम हमले और यहूदियों के कत्लेआम के दृश्य दर्शा रहे हैं कि आतंकवाद कितना क्रूर रूप धारण करता जा रहा है। यह क्रूरता जिस तरह दुनियाभर में अलग-अलग घटनाओं के माध्यम से सामने आ रही है उससे यह भी प्रदर्शित होता है कि आतंकवाद इस समय विश्व की सबसे बड़ी समस्या का रूप ले चुका है। खासतौर पर इस्लामिक आतंकवाद ने वैश्विक नेताओं के माथे पर चिंता की लकीरें बढ़ा दी हैं क्योंकि इसका शिकार निर्दोष और मासूम लोग बन रहे हैं। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि अपने हक को लड़ाई के नाम पर कुछ देश और संगठन आतंकवाद की राह को सही ठहराने पर तुले हैं जबकि इसके चलते सबको सिर्फ नुकसान ही होता है।

देखा जाये तो आतंकवाद के दिये जख्मों से सिर्फ इजराइल ही नहीं कराह रहा है बल्कि अब खतरा पूरे यूरोप पर मंडरा रहा है। हम आपको बता दें कि फ्रांस में एक शिक्षक और बेल्जियम में दो स्वीडिश फुटबॉल प्रशंसकों की हत्याओं के बाद फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने कहा है कि यूरोप में इस्लामिक आतंकवाद

तेजी से बढ़ रहा है और इससे सभी देशों को खतरा है। मैक्रों की यह टिप्पणी अल्बानिया की यात्रा के दौरान आई है। हम आपको बता दें कि



फ्रांसीसी राष्ट्रपति की यह टिप्पणी एक 45 वर्षीय हमलावर द्वारा ऑनलाइन पोस्ट किये गये वीडियो में खुद को इस्लामिक स्टेट का सदस्य बताते

जाने और ब्रसेल्स में दो स्वीडिश फुटबॉल प्रशंसकों की हत्या की बात स्वीकार किये जाने के बाद आई है। इसके अलावा 13 अक्टूबर को फ्रांस

उस हमलावर और हत्यारे ने भी इस्लामिक स्टेट के प्रति निष्ठा जताई थी। इसके अलावा फ्रांस हाल ही में अपने इतिहास के सबसे बड़े दंगों के

फ्रांस के राष्ट्रपति की टिप्पणी बहुत महत्वपूर्ण है। हम आपको यह भी बता दें कि मैक्रों ने अपने साक्षात्कार में कहा है कि सभी यूरोपीय देश

दुर्भाग्यवश ही हमलावरों को सावधान भी किया था। इसके अलावा, ब्रिटेन भी हाल के वर्षों में इस्लामिक कट्टरपंथ से उपजी कई घटनाओं का पीड़ित रहा है। वहीं इस्लामिक देशों की बात करें तो यह साफ नजर आ रहा है कि उनमें से कुछ देश धर्म के नाम पर लोगों को उकसाने का काम कर रहे हैं। जैसे ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने कहा है कि अगर गाजा में इजराइल के अपराध जारी रहे तो दुनिया भर के मुसलमानों की ओर से किये जाने वाले प्रतिरोध को कोई नहीं रोक पाएगा। देखा जाये तो यह खुलेआम धर्म के नाम पर लोगों को उकसाने का प्रयास है। इसके अलावा, जिस तरह से हिज्बुल्ला जैसे इस्लामिक आतंकवादी संगठन हमास के पक्ष में खड़े होकर आवाज बुलंद कर रहे हैं वह भी पूरी दुनिया के लिए चेतावनी है। तमाम वैश्विक मंचों की बैठक के दौरान बड़ी-बड़ी बातें कही जाती हैं लेकिन जल्दत इस बात की है कि आतंकवाद से निवटने को सर्वोच्च प्राथमिकता बनाया जाये और उसके स्वरूपों में अंतर नहीं कर सबके साथ सच्ची से निबटा जाये।

असुरक्षित है क्योंकि वास्तव में इस्लामी आतंकवाद का पुनरुत्थान हो रहा है। इसके अलावा, फ्रांस के आतंकिक मामलों के मंत्री गेराल्ड

दौर से भी गुजरा है। उस दौरे का आरोप भी इस्लामिक कट्टरपंथियों पर ही लगा था। इसलिए इस्लामिक आतंकवाद के पांव पसारने संबंधी

मिर्गी के दौरों से जुड़े हो सकते हैं नींद और तनाव

मुंबई (वार्ता)। भारत में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता है। यह सुझाव मानसिक रोग विशेषज्ञों ने दिया है। यहाँ जारी प्रेस विज्ञापन के अनुसार विश्व के करीब 15 प्रतिशत मानसिक रोगी भारत में हैं। इनके उपचार के लिए

लंदन (आईएनएस)। नींद के पैटर्न और तनाव हार्मोन से यह समझा जा सकता है कि मिर्गी से पीड़ित लोगों को कब और कैसे दौरों पड़ने की संभावना है। एक नए अध्ययन से यह पता चला है। यूके में बर्मिंघम विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने मिर्गी के प्रमुख लक्षणों पर नींद और तनाव-हार्मोन कोर्टिसोल की एकाग्रता में परिवर्तन जैसी विभिन्न शारीरिक प्रक्रियाओं के प्रभाव को समझने के लिए गणितीय मॉडलिंग का उपयोग किया, जिसे इफिलेटीफॉर्म डिस्ऑर्डर (ईडी) कहते हैं। मिर्गी एक गंभीर न्यूरोलॉजिकल डिस्ऑर्डर है जिसमें बार-बार दौरों पड़ते हैं। वैज्ञानिकों ने इडियोपैथिक मिर्गी से पीड़ित 107 लोगों की 24 घंटे की ईईजी रिकार्डिंग का विश्लेषण किया और मिर्गी के साव के अलग-अलग वितरण वाले दो उपसमूहों की खोज की: एक



65 मिलियन लोगों को मिर्गी है दुनिया भर में, जिनमें से कई विशिष्ट ट्रिगर की रिपोर्ट करते हैं जो उनके दौरों की अधिक संभावना बनाते हैं - जिनमें से सबसे आम है तनाव, नींद की कमी और थकान।

नींद के दौरान सबसे अधिक घटना वाले और दूसरा दिन के दौरान कभी भी वाले।

पीएलओ एस क म्यूटेशन शानला बायोलाजी में अपने निष्कर्षों को प्रकाशित करते हुए, टीम ने खुलासा किया कि या तो कोर्टिसोल या स्लीप स्टेज ट्रांज़िशन की गतिशीलता, या दोनों, ईडी के अधिकांश देखे गए वितरणों को समझता है। यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर सिस्टम्स मॉडलिंग एंड क्वांटिटिव बायोमैडिसिन से जुड़ी मुख्य लेखिका इस्बेला मारिनेली ने कहा, दुनिया भर में लगभग 65 मिलियन लोगों को मिर्गी है, जिनमें से कई विशिष्ट ट्रिगर की रिपोर्ट करते हैं जो उनके दौरों की अधिक संभावना बनाते हैं - जिनमें से सबसे आम है तनाव, नींद की कमी और थकान। उन्होंने

कहा, हमारे निष्कर्ष वैचारिक सबूत प्रदान करते हैं कि नींद के पैटर्न और कोर्टिसोल की एकाग्रता में परिवर्तन मिर्गी के दौरों की लय के अंतर्निहित शारीरिक चालक हैं। हमारा गणितीय दृष्टिकोण बेहतर समझ के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है कि कौन से कारक ईडी गतिविधि की घटना को सुविधाजनक बनाते हैं और संभावित रूप से दौरों को ट्रिगर करते हैं।

शोधकर्ताओं का गणितीय मॉडल मस्तिष्क की गतिविधि का वर्णन करता है कि उत्तेजना कैसे बदल सकती है - या तो नींद के चरणों के बीच संक्रमण या कोर्टिसोल की एकाग्रता में भिन्नता। मिर्गी से पीड़ित कई लोगों में ईडी की आवृत्ति रात के दौरान, सुबह के समय और तनावपूर्ण स्थितियों में बढ़ जाती है। टीम ने पाया कि एक उपसमूह में गए वितरणों को समझता है। यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर सिस्टम्स मॉडलिंग एंड क्वांटिटिव बायोमैडिसिन से जुड़ी मुख्य लेखिका इस्बेला मारिनेली ने कहा, दुनिया भर में लगभग 65 मिलियन लोगों को मिर्गी है, जिनमें से कई विशिष्ट ट्रिगर की रिपोर्ट करते हैं जो उनके दौरों की अधिक संभावना बनाते हैं - जिनमें से सबसे आम है तनाव, नींद की कमी और थकान। उन्होंने

मानसिक स्वास्थ्य में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता

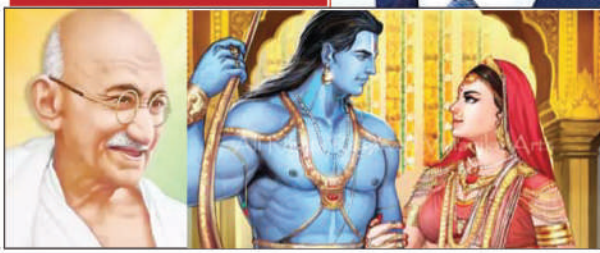
मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस के अनुसार मानसिक रोग से ग्रस्त 20 प्रतिशत से अधिक भारतीयों को उपचार करने की जरूरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के आंकड़ों के अनुसार भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर एक प्रतिशत ही खर्च किया जाता है। मंगलवार को यहां हुई संगोष्ठी में चर्चा के दौरान विशेषज्ञों ने भारत में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। संगोष्ठी के दौरान विशेषज्ञों ने कार्यक्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला और उन्होंने व्यवसायियों से इस क्षेत्र में निवेश करने का आग्रह किया।

गांधी, सीता और राम के विचारों को आत्मसात करें: एडम्स

न्यूयॉर्क (अमेरिका) (भाषा)। न्यूयॉर्क सिटी के मेयर एरिक एडम्स ने कहा है कि दिवाली हम सभी को अंधकार को चीरकर प्रकाश की ओर बढ़ने की याद दिलाती है। उन्होंने लोगों से भगवान राम, देवी सीता और महात्मा गांधी के विचारों को आत्मसात करने तथा बेहतर मानव बनने का आह्वान किया। अपने न्यूयॉर्क आवास 'ग्रेसिया मैशन' पर आयोजित वार्षिक दिवाली समारोह में एडम्स ने लोगों से दुनिया में अंधकार को दूर कर रोशनी फैलाने का आह्वान किया। एडम्स ने कहा, 'दिवाली सिर्फ एक छुट्टी नहीं है। यह हम सभी को याद दिलाती है कि हमें दुनिया से अंधकार को मिटाना होगा और प्रकाश फैलाना होगा।' रोशनी



न्यूयॉर्क के मेयर ने दिया प्रेरक दिवाली संदेश

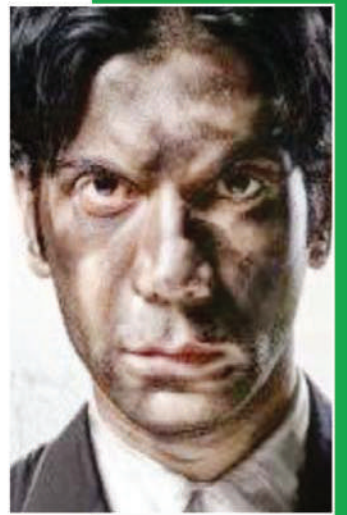
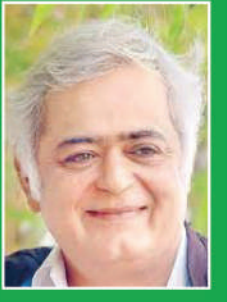


का त्योहार इसी बारे में है।

इस वार्षिक समारोह में सैकड़ों भारतवंशी अमेरिकी और दक्षिण एशियाई समुदाय के नागरिक तथा अन्य देशों से आए प्रवासियों का समुदाय एवं सरकारी अधिकारी शामिल हुए। एडम्स ने कहा कि दिवाली मोमबत्ती या दिए जलाने से कहीं अधिक 'हमारे जीवन को प्रकाशमान' करने के बारे में है। उन्होंने कहा, 'दुनिया में बहुत अधिक अंधकार है जो हम हर दिन देखते हैं। इसलिए अगर हम वास्तव में रामायण के जीवन, सीता के जीवन, गांधी के जीवन में विश्वास करते हैं तो हमें निश्चित रूप से गांधी के नक्शे कदम पर चलना होगा।' एडम्स ने कहा कि ऐसे वक्त में जब दुनियाभर में अंधकार छाया हुआ है और दुनिया बेकसूर लोगों की मौत का गवाह बन रही है, ऐसे में 'हम इसे (अंधकार को) हमारे भविष्य को और मानवता को निगलते हुए नहीं देख सकते। उन्होंने कहा, 'आइए बेहतर मनुष्य बनें। दिवाली के सार को आत्मसात करें। गांधी की विचारधारा को आत्मसात करें। सीता की विचारधारा को अपनाएं। राम की विचारधारा को जिएं और तभी हम सही मायने में इस दिन की मूल भावना को आत्मसात कर पाएंगे जो वास्तव में इसका अर्थ है।

'शाहिद' के 10 बरस पूरे होने पर हंसल मेहता बोले: फिल्म ने बहुत कुछ दिया

मुंबई (भाषा)। फिल्म निर्माता हंसल मेहता ने बुधवार को अपनी वर्ष 2013 की ड्रामा फिल्म 'शाहिद' की 10वीं वर्षगांठ मनाई। मेहता की जीवनी पर आधारित इस फिल्म को लेकर कहा कि इस फिल्म ने उन्हें बहुत कुछ दिया है और इस फिल्म से ही उन्होंने अभिनेता राजकुमार राव के साथ काम करना शुरू किया। यह फिल्म वकील एवं मानवाधिकार कार्यकर्ता शाहिद आज़मी के जीवन पर आधारित है जिनकी वर्ष 2010 में मुंबई में हत्या कर दी गई थी। फिल्म 'शाहिद' को आलोचकों ने अच्छी प्रतिक्रिया दी थी। टोरंटो अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 2012 में 'शाहिद' का वर्ल्ड प्रीमियर किया गया जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया। फिल्म निर्माता मेहता ने फिल्म का आधिकारिक पोस्टर सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर साझा कर लिखा, 'शाहिद के 10 साल पूरे हुए। इस फिल्म ने हम सबको जो दिया, उसके लिए बहुत बहुत आभार। शाहिद आज़मी की दुर्भाग्यपूर्ण हत्या ने मुझे एक फिल्म निर्माता के रूप में नया जीवन दिया। इस फिल्म से ही मेरी राजकुमार राव के साथ काम करने की शुरुआत हुई।' मेहता का नवीनतम प्रोजेक्ट 'द बकिंगम मर्डर्स' है और 'जियो मामी मुंबई फिल्म उत्सव' की शुरुआत करीना कपूर खान अभिनीत इस फिल्म के प्रदर्शन के साथ होगी।



टाइगर 3 के ट्रेलर को मिले प्यार से खुश हैं सलमान

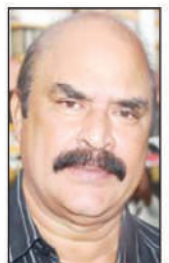
मुंबई (आईएनएस)। 'टाइगर 3' के ट्रेलर को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया से बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान बेहद खुश हैं। उन्होंने कहा कि वह भाग्यशाली रहे हैं कि उन्हें अपने करियर में ऐसी फिल्म मिली जिन्होंने उन्हें बहुत प्यार दिया। सलमान ने कहा कि मुझे लगता है कि टाइगर 3 के ट्रेलर की प्रतिक्रिया के रूप में आज हम जो देख रहे हैं वह बिल्कुल असाधारण है। मैं भाग्यशाली रहा हूँ कि मुझे अपने करियर में ऐसी फिल्म मिली, जिन्होंने मुझे बहुत प्यार दिया। लेकिन ट्रेलर लॉन्च के बाद इतनी सराहना पाना और इतना उन्माद



देखना वाकई खास एहसास है। उन्होंने आगे कहा कि मुझे खुशी है कि हमारा ट्रेलर हिट हुआ है और लोग सिनेमाघरों में टाइगर 3 देखने के लिए बेहद उत्साहित हैं। कैटरिना और मुझे जोया और टाइगर के रूप में वापस देखने पर लोगों ने जिस तरह से प्रतिक्रिया दी है, उससे मैं भी वास्तव में प्रभावित हूँ। अभिनेता ने आगे कहा कि मुझे पता है कि ये दोनों सुपर-एजेंट दर्शकों के दिलों में एक विशेष स्थान रखते हैं और मुझे खुशी है कि हम टाइगर 3 के ट्रेलर के साथ उनकी उम्मीदों पर खरे उतरते हैं।

मलयालम एक्टर कुंद्रा जॉनी का निधन

तिरुवनंतपुरम (आईएनएस)। मलयालम एक्टर कुंद्रा जॉनी का एक प्राइवेट हॉस्पिटल में हार्ट अटैक आने से निधन हो गया। इंडस्ट्री के सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। फिल्म इंडस्ट्री में खलनायक के रूप में पहचान बनाने वाले 71 वर्षीय अभिनेता ने मंगलवार रात घर पर सीमे में दर्द होने की शिकायत की और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली। सूत्रों ने बताया कि उनका अंतिम संस्कार गुरुवार को उनके गृह नगर कोल्लम में किया जाएगा। जॉनी जोसेफ के रूप में जन्मे वह लोकप्रिय रूप से कुंद्रा जॉनी के नाम से जाने जाते थे। 100 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय कर चुके जॉनी ने 1979 में अपनी शुरुआत की और वह फिल्म इंडस्ट्री का एक अभिनेता थे। अभिनेता अक्षर खलनायक की भूमिका निभाने के लिए पहली पसंद थे।



हावड़ा ब्रिज दुर्गा पूजा से पहले 'अल्पना' से सजा

कोलकाता (भाषा)। कोलकाता के 80 वर्ष पुराने मशहूर 'हावड़ा ब्रिज' को दुर्गा पूजा से पहले सजाया गया है और कलाकारों के एक समूह ने इस पर बंगाल के 'अल्पना' चित्र उकेरे हैं। अधिकारियों ने कहा कि पुल को एलईडी लाइटों से भी सजाया गया है जिससे सूर्यास्त के बाद यह पुल एक नए और सुंदर रूप में दिखता है। लोकप्रिय कलाकार संजय पॉल और विभिन्न कला कौलेंजों के लगभग 40 छात्रों के उनके दल ने 2,313 फुट लंबे पुल के एक हिस्से को 'अल्पना' चित्रकला से सजाया। ग्रामीण बंगाल में इसी कला से फर्श और दीवारों को सजाया जाता है। पॉल ने

कहा, 'हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए हावड़ा ब्रिज से बेहतर संरचना क्या हो



दमदार अभिनय से दर्शकों के दिलों में विशिष्ट पहचान बनाई ओमपुरी ने

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड में ओमपुरी का नाम ऐसे अभिनेता के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने अपने दमदार अभिनय और संवाद शैली से लगभग तीन दशक तक दर्शकों को अपना दीवाना बनाया। हरियाणा के अंबाला में 18 अक्टूबर 1950 को जन्मे ओमपुरी का बचपन काफी कष्टमय बीता। परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिये उन्हें एक ढाबे में नौकरी तक करना पड़ी थी। लेकिन कुछ दिनों बाद ढाबे के मालिक ने उन्हें चोरी का आरोप लगाकर हटा दिया।

बचपन में ओमपुरी जिस मकान में रहते थे उसके पीछे एक रेलवे यार्ड था। रात के समय ओमपुरी अक्सर घर से भागकर रेलवे यार्ड में जाकर किसी ट्रेन में सोने चले जाते थे। उन दिनों उन्हें ट्रेन से काफी लगाव था और वह सोचा करते थे कि बड़े होने पर वह रेलवे इंडस्ट्री बनेंगे। कुछ समय के बाद ओमपुरी अपने निहाल पंजाब के पटियाला चले आए जहां उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। इस दौरान उनका रुझान अभिनय की ओर हो गया और वह नाटकों में हिस्सा लेने लगे। इसके बाद ओमपुरी ने खलनायक कॉलेज में दाखिला ले लिया। इस दौरान ओमपुरी एक वकील के यहां बतौर मुंशी काम करने लगे। इस बीच एक बार



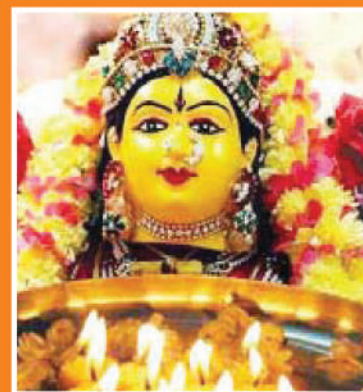
जन्मदिवस 18 अक्टूबर के अवसर पर

नाटक में हिस्सा लेने के कारण वह वकील के यहां काम पर नहीं गये। बाद में वकील ने नाराज होकर ओमपुरी को नौकरी से हटा दिया। जब इस बात का पता कॉलेज के प्राचार्य को चला तो उन्होंने ओमपुरी को कैम्पस्ट्री लैब में सहायक की नौकरी दे दी। इस दौरान वह कॉलेज में हो रहे नाटकों में हिस्सा लेते रहे। यहां उनकी मुलाकात हरपाल और नीना तिवाना से हुईं जिनके सहयोग से वह पंजाब कला मंच नामक नाट्य संस्था से जुड़ गए। लगभग तीन वर्ष तक पंजाब कला मंच से जुड़े रहने के बाद ओमपुरी ने दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिला ले लिया।

ओमपुरी ने अपने सिने करियर की शुरुआत वर्ष 1976 में प्रदर्शित फिल्म 'घासीराम कोतवाल' से की। मराठी नाटक पर बनी इस फिल्म में ओमपुरी ने घासीराम का किरदार निभाया था। इसके बाद ओमपुरी ने 'गोधूलि', 'भूमिका', 'भूख', 'शायद', 'सांच' को आंच नहीं जैसी कला फिल्मों में अभिनय किया लेकिन इससे उन्हें कोई खास पहचान नहीं मिली। वर्ष 1980 में प्रदर्शित फिल्म 'आक्रोश' ओमपुरी के सिने करियर की पहली हिट फिल्म साबित हुई।

शक्तिपीठ मां मंगलागौरी में पूरी होती है भक्तों की मनोकामना

गया, 18 अक्टूबर (वार्ता) बिहार में गया शहर स्थित मां मंगलागौरी मंदिर में पूजा करने वाले भक्तों की मनोकामना पूरी होती है। मां मंगलागौरी शक्ति पीठ में शारदीय नवरात्र को लेकर भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी है। शक्तिपीठ मां मंगला गौरी मंदिर में नवरात्र के महीने में दूर-दर्राज से भक्त आते हैं और अपने परिवार की सुख, समृद्धि, शांति के लिए प्रार्थना करते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव जब माता पार्वती के जलते शरीर को लेकर तांबड़ करतबे हुए आकाश मार्ग से चल पड़े,



तब उनके रौद्र रूप को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने सुवर्ण चक्र चलाकर मां पार्वती के शरीर के कई टुकड़े कर दिए। जहां-जहां माता पार्वती के शरीर के टुकड़े गिरे, वह स्थल शक्तिपीठ कहलाया। गया शहर के भस्मकूट पर्वत पर माता सती का वक्षस्थल गिरा, जो मंगला गौरी शक्ति पीठ के रूप में जाना जाता है। मंदिर के अंदर कई वर्षों से अखंड ज्योति जल रही है, जिसके दर्शन कर श्रद्धालु पूजा-पाठ करते हैं।

ऋतिक और दीपिका की फिल्म 'फाइटर'



मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन और अभिनेत्री दीपिका पादुकोण की आने वाली फिल्म 'फाइटर' का नया पोस्टर रिलीज हो गया है। फाइटर के निर्देशक सिद्धार्थ आनंद ने पोस्टर शेयर किया है। इस पोस्टर में 100 डेज टू फाइटर और कैप्शन में लिखा, फाइटर 100 दिन में आ रही है। सिद्धार्थ आनंद के निर्देशन में बन रही फिल्म फाइटर में ऋतिक रोशन, दीपिका पादुकोण और अनिल कपूर लीड रोल में नजर आएंगे। इनके अलावा करण सिंह ग्रोवर और तलत अजीज भी अहम किरदार में नजर आएंगे। यह फिल्म एप्रिल तक एक्शन है।

